वार्तालाप – 415, मैसूर (कर्नाटक) ताः 8.10.07
Disc.CD. 415, dated 8.10.07 at Mysore (Karnatak)

समय – 12.21
जिज्ञासू – बाबा, भारत को अंग्रेज़ी में इंडिया बोलते हैं। इसका बेहद का अर्थ क्या है?
बाबा – इंडिया कौन बोलते हैं? भारतवासी बोलते हैं कि विदेशी बोलते हैं? विदेशी बोलते हैं। जिन्होंने इंड किया है इस दुनियाँ का वो ही भारत का नाम इंडिया रखते हैं। दुनियाँ का अंत किसने किया? क्रिश्चियन्स ने किया। तो फिर जिन्होंने अंत किया है तो वही कहते हैं इंडिया। इंड करने वाली कब आएगी? अंत में ही आएगी।
Time: 12.21
Student: Baba, *Bharat* is called India in English. What does it mean in an unlimited sense?
Baba: Who calls it 'India'? Do the Indians call it so or do the foreigners call it? The foreigners call it so. Those who have brought about the 'end (Ind)' of this world, they themselves name *Bharat* as India. Who brought the world to an end? The Christians did it. So, those who have brought about the end, they themselves call it India. When will the one who brings about the 'end' come? She will come only in the end.

समय – 16.00
जिज्ञासू – बाबा, द्वापर के आदि में वेद ,शास्त्र ,रामायण, महाभारत, भागवत, आदि का निर्माण हुआ था। उन सबकी भाषा क्या थी? हिंदी, संस्कृत या देवनागरी भाषा?
बाबा – न देवनागरी, न संस्कृत, न हिंदी।
जिज्ञासू – मूलकृति।
Time: 16.00
Student: Baba, in the beginning of the Copper Age, *Vedas*, scriptures, *Ramayana*, *Mahabharata*, *Bhaagwat*, etc. were written. What was the language of those scriptures? Was it Hindi, *Sanskrit* or *Devnagari* language?
Baba: Neither *Devnagari*, nor *Sanskrit*, nor Hindi.
Student: The original creation.

बाबा – नहीं। संस्कृत माना सुधरी हुई भाषा। क्या? सुधरी हुई उसे कहा जाता है जो समझ में आ जाए। गलतफहमी कुछ पैदा न हो। कोई भाषा ऐसी होती है – बोली गई और उसमें ढेर सारी गलतफहमियाँ पैदा हो जाती हैं। क्या? भाषोंएँ ऐसी भी तो होती हैं कि पूरा क्रिया कारण का विश्लेषण नहीं है, तो गलतफहमी पैदा होती है। होती है ना। जैसे एक वाक्य है – "रोको, मत जाने दो।" बीच में कॉमा नहीं लगाया तो उसका अर्थ ये भी हो सकता है – "रोको मत जाने दो।"
Baba: No. *Sanskrit* means refined language. What? That language is called refined which is understandable. There should be no misunderstanding. There are some such languages, which when spoken create a lot of misunderstandings. What? There are such languages as well that they create a misunderstanding if the action and reason are not analysed properly. Such misunderstanding emerges, doesn't it? For example, there is a sentence '*roko, mat jaaney do'* (stop, don't let him go). If a comma is not added in between, then it can also mean – '*roko mat jaaney do'* (don't stop (him), let him go).

तो भाषा जो हैं वो सुधरी हुई का मतलब है कि सारी बात क्लियर हो जाए। अनक्लियर कोई बात न रहे। तो संस्कृत जो बनाई गयी है मनुष्यों के द्वारा, विद्वानों, आचार्यों के द्वारा वो बाद में बनाई ै गई। पहले बने हैं वेद। वेद संस्कृत भाषा नहीं है। क्या? वैदिक भाषा है। संस्कृत भाषा नहीं है और उस वैदिक भाषा को सब कोई समझ नहीं सकते और बोलना तो हैं ही नहीं आजकल। जैसे की ब्रह्मा के द्वारा मुरली बोली गई। मुरली सबने, बहुतों ने पढ़ी

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

ब्राह्मणों ने और बहुतों ने दूसरों को सुनाई। महावाक्य सुने और दूसरों को सुनाए दिए। क्या समझे?
जिज्ञासू – नहीं।
So, a refined language means that the entire thing should become clear. Nothing should remain unclear. So, the *Sanskrit* language created by the human beings, by the scholars, and teachers was created later on. The *Vedas* were created first. *Ved* is not *Sanskrit* language. What? It is a Vedic language. It is not *Sanskrit* language and everyone can't understand that Vedic language and nobody talks in that language nowadays at all. For example, *Murli* was narrated through Brahma. Everyone, many Brahmins read the *Murli*; and many narrated it to the others. They heard the versions *(mahavakya)* and narrated it to the others. What did you understand?
Student: No.

बाबा – तो गलतफहमी पैदा हो गई ना। तो उसको सुधरी हुई भाषा नहीं कहेंगे। वो मुरली सुधरी हुई तब कहें जब उसके एक–एक वाक्य का अर्थ निकल आए। हिज्जे–हिज्जे क्लियर हो जाए। तब कहेंगे संस्कृत भाषा। संस्कृत में सारी व्याख्याऐंएँ निकली हैं। जैसे वेदों से आरण्यक निकले, ब्राह्मण निकले, उपनिषद निकले। ये सारी व्याख्याऐं हैं ना। फिर लास्ट में पुराण निकले। ऐसे ही ये हमारी जो भाषा है, बेसिक में भी हमारी भाषा थी। मुरलियों की ही तो भाषा थी; लेकिन समझ नहीं थी और अब वो भाषा पूरी समझ में आ रही हैं।
Baba: So, a misunderstanding emerged, didn't it? So, it will not be called a reformed language. That *Murli* will be called a refined language when the meaning of every sentence emerges. Every part *(hijje-hijje)* should become clear. Then it will be called *Sanskrit* language. All the clarifications have come up in *Sanskrit* language. For example, *Aranyakas*, *Brahmanas*, *Upanishads* emerged from *Vedas*. All these are interpretations, aren't they? Then, at last the *Puranas* emerged. Similarly, this language of ours was the same in the basic knowledge too. It was the language of the *Murlis* indeed. But there was no understanding (of *Murlis* then) and now we are able to understand that language completely.

समय – 19.02
जिज्ञासू – बाबा, सभी को आत्मिक स्थिती में देखना है। शंकर को जब देखते हैं तो दो आत्माओं को देखना है या एक को देखना है?
बाबा – शंकर का अर्थ क्या है? यही तो सुधरी हुई भाषा है। शंकर शब्द का अर्थ क्या है? शंकर माना मिक्स। तो शंकर को देखना है ये क्या मुरली में डायरेक्शन दिया है?
जिज्ञासू – नहीं।
Time: 19.02
Student: Baba, we have to see everyone in a soul conscious stage. When we see Shankar, should we see two souls or one?
Baba: What does Shankar mean? This itself is the refined language. What does the word 'Shankar' mean? Shankar means 'mix'. So, has the direction been given in the *Murli* that we should see Shankar?
Student: No.

बाबा – तो फिर हम क्यों देखें?
जिज्ञासू – साकार में निराकार को देखना है।
बाबा – हां, हम क्यों देखे उसमें? हम शंकर को क्यों देखें? हम ब्रह्मा को क्यों देखें? हम किसको देखें? हम तो शिव बाबा को देखते हैं। जानते हैं कि शिवबाबा का अपना शरीर नहीं है। फिर भी बोलने के लिए , कर्मेन्द्रियों से कर्म करने के लिए शरीर तो चाहिए। तो जो

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

शरीर में काम करता है वो किसका शरीर हो गया? जिसमें वो काम करता है? शिवबाबा का शरीर हो गया। हम दूसरे को क्यों याद करें। दूसरे को याद करेंगे तो उसका संग का रंग हमको लग जाएगा। बाबा ने तो कहा शंकर को याद ही नहीं करना हैं। शंकर को नहीं देखना है। शंकर को फॉलो नहीं करना है। हम उसको देखेंगे कहीं हमको फॉलो करने की लत पड़ गई तो हमारा सत्यानाश हो जाएगा।

Baba: So, why should we see (Shankar)?

Student: We have to see the corporeal in the incorporeal.

Baba: Why should we see (Shankar) in him? Why should we see Shankar? Why should we see Brahma? Whom should we see? We see Shivbaba. We know that Shivbaba does not have a body of His own. Even then a body is required to speak, to perform actions through the bodily organs. So, to whom does the body through whom He works, belong? The body belongs to Shivbaba. Why should we remember the other one? If we remember the other one, then we will be coloured by his company. Baba has said: You should not remember Shankar at all. You should not see Shankar. You should not follow Shankar. If we see him, if we become habituated to follow him, then we will be doomed.

समय – 20.15

जिज्ञासू – बाबा, कुमारी वो हैं जो 21 कुल का उद्धार करेगी। इसका मतलब क्या है?

बाबा – माना कुमारी हैं कौनसी? बहुत–सी कुमारी ऐसी होती हैं कहने के लिए तो सरेन्डर हो गई कुमारी हैं; लेकिन वास्तव में कुमारी नहीं है। तो ऐसी कुमारी कौन–सी है जो आदि से लेकर के लौकिक जीवन में भी कुमारी और जब ज्ञान में आए तो भी कुमारी। एडवान्स में आए तो भी कुमारी? उसका गायन क्या है? उसका मंदिर कौन–सा है? कन्याकुमारी। उनका भी हुजूम है। क्या?

Time: 20.15

Student: Baba, *Kumari* is the one who causes the uplift of the 21 clans. What does it mean?

Baba: Who is a (real) *Kumari*? There are many *Kumaris*, who surrender for namesake, they are *Kumaris* (virgins), but actually they are not *Kumaris*. So, who is that *Kumari*, who remains a *Kumari* from the beginning to the end in the *lokik* life as well as the path of knowledge and also in the path of advance knowledge? In what way is she praised? Which temple is dedicated to her? *Kanyakumari* (a place in South India). She too has a group. What?

जिज्ञासू – 21 कुल का मतलब क्या है?

बाबा – 21 कुल का मतलब ये हैं कि 21 पीढ़ी तक जो भी उनके बाद` सरणी चलेगी उनका बच्चा, उनका बच्चा, उनका बच्चा, उनका बच्चा, उन सबका कल्याण करेगी। माना अपने से जन्म लेने वालों का ही कल्याण नहीं करेगी। माना अपने से ही जन्म लेनेवालों का ही कल्याण नहीं करेगी, माना राधा–कृष्ण वाली आत्माओं का ही कल्याण नहीं करेगी। राधा–कृष्ण से जो पीढ़ी पैदा होगी उनका भी वो कल्याण करेगी। फिर उनसे जो पैदा होंगे उन आत्माओं का भी कल्याण करेगी। 21 पीढ़ी का कल्याण करेगी।

Student: What does '21 clans' mean?

Baba: 21 clans means , for the series that will continue for 21 generations in her lineage, her children, her childrens' children, and their children, children of those children ; she will bring benefit to all of them. It means that she will not only bring benefit to the ones who take birth through her, she will bring benefit not just to the souls of Ram and Krishna; she will bring benefit to the progeny born through Radha and Krishna as well. Then she will also bring benefit to the souls who will take birth through them. She will bring benefit to the 21 generations.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय – 25.26
जिज्ञासू – कलातीत की स्टेज केवल बाप की है या बच्चे भी नम्बरवार पाते हैं?
बाबा – सूर्य की और सूर्यवंशियों की स्टेज कलातीत होनी चाहिए या कलाओं में बंधी हुई होनी चाहिए या कलाओं से नीचे होनी चाहिए? चंद्रमा कलातीत नहीं होता है। कलाओं से परे नहीं होता है कलाओं से बंधा हुआ होता है; लेकिन सूर्यवंशी बच्चे, वो सब कलातीत हैं; क्योंकि वो संगमयुग में ही 16 कला सम्पूर्ण से ऊँची स्टेज वाले बन जाऐंगे या नीची स्टेज वाले बनेंगे? संगमयुग में ही, वो भी वही लगातार चढ़ती कला वाली आत्मोंएँ हैं।
Time: 25.26
Student: Does only the father attain the stage of *kalaateet* (beyond the celestial degrees) or do the children also attain this stage numberwise?
Baba: Should the stage of the Sun and the *Suryavanshis* (those belonging to the Sun dynasty) be *kalaateet* or should it be bound within the celestial degrees or should it be less than the celestial degrees? The Moon is not *kalaateet.* It is not beyond the celestial degrees; it is bound within the celestial degrees, but all the *Suryavanshi* children are *kalaateet* because, will they attain a stage higher than the 16 celestial degrees or will they become the ones with a lower stage in this very Confluence Age? They are also the souls (like the father) who attain the same stage of continuously increasing celestial degrees.

समय – 26.14
जिज्ञासू – बाबा, आप बोलते हैं मनन–चिंतन–मंथन करने से ही स्वदर्शन चक्र धारी भी बन सकते हो और अपना पार्ट भी जान जाते हो। तो हमको मनन–चिंतन–मंथन में जाना है या निःसंकल्पी स्टेज में जाना है।
बाबा – कोई सीढ़ी चढ़े। और पहली, दूसरी सीढ़ी न चढ़े, एकदम ऊपर वाली में चढ़ जाए। तो खतरा है ना। ऐसा न हो कि नीचे गिर जाए।
जिज्ञासू – हाई जम्प।
Time: 26.14
Student: Baba, you say that we can become *swadarshan chakradhaari* (the one who holds the discus of self-realization) and we also come to know our parts only by thinking and churning. So, do we have to attain the stage of thinking and churning or do we have to achieve a thoughtless *(nirsankalpi)* stage?
Baba: If someone climbs a ladder and if without climbing the first or second step he climbs the highest step suddenly, then there is a danger for him, isn't there? It is possible that he may fall down.
Student: High jump.

बाबा – हाई जम्प भी प्रैक्टिस होगी तब ही तो लगाऐंगे। आखरी सीढ़ी पर एकदम कैसे चले जाऐंगे? मनन–चिंतन–मंथन की बीच की सीढ़ियाँ भी है। एकदम ऊँची सीढ़ी पर कैसे चले जाऐंगे? मनन–चिंतन–मंथन की कितनी सीढ़ियाँ हैं? 84 जन्मों की 84 सीढ़ियाँ हैं। मनन–चिंतन जब आखरी स्टेज पर पहुँच जाएगा तब हमारे हर जन्म का पता लग जाएगा कि नहीं? मनन–चिंतन की आखरी स्टेज जब होगी तो हमारे सभी जन्मों का पता लगेगा कि नहीं लगेगा? इतना मनन–चिंतन–मंथन बैठ जाएगा क्लियर। चलो राम वाली आत्मा को ले लो। राम वाली आत्मा का जब आखरी स्टेज का मनन–चिंतन–मंथन होगा और उनको निराकारी स्टेज में हमेशा के लिए पहुँचना है ऐसी स्टेज आई हुई है। तो उस समय उनको अपने 84 जन्मों का पूरा साक्षात्कार हो जाएगा कि नहीं बुद्धियोग से? हो जाएगा। तो वो एकदम हो जाएगा या धीरे–धीरे होगा?
जिज्ञासू – धीरे–धीरे होगा।
बाबा – हाँ। 84 जन्म भी तो धीरे ही धीरे लिए हैं। तो धीरे–धीरे उनकी पहचान होगी।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: We will be able to take a high jump only when we have practiced it. How will we reach the last step suddenly? There are also the steps of thinking and churning in between. How will we reach the highest step suddenly? How many steps of thinking and churning are there? There are 84 steps of the 84 births. When our thinking and churning reaches the last stage, then will we come to know about our every birth or not? When we reach the last stage of thinking and churning, then will we come to know about all our births or not? The thinking and churning will become so clear. OK, take the soul of Ram. When the soul of Ram reaches the last stage of thinking and churning and when he has reached a stage where he is about to reach the incorporeal stage forever, so at that time will he not experience the complete vision of all his 84 births or through the connection of the intellect? He will experience it. So, will that happen suddenly or gradually?
Student: It will happen gradually.
Baba: Yes. We have taken 84 births gradually. So, the realization of those births will also take place gradually.

समय – 28.28
जिज्ञासू – बाबा, पांच विकार। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। जब हम अपन को आत्मा मानते हैं तो काम और अहंकार ये दोनों चला जाता है; लेकिन ये क्रोध, लोभ और मोह जल्दी नहीं छोड़ता है। ऐसा क्यों?
बाबा – जिसमें काम का अंश होगा। उसमें समझ लो क्रोध ज़रूर होगा। ऐसे हो ही नहीं सकता कि कोई में काम का अंश रह जाए और क्रोध न रहे। कामेषु क्रोधेषु ज़रूर होते हैं। जिसकी काम का आस पूरी नहीं होती है तो ज़रूर क्रोध में आ जाता है।
Time: 28.28
Student: Baba, five vices, lust, anger, greed, attachment, ego. When we consider ourselves to be souls, then we become free from lust and ego, but these anger, greed and attachment don't leave us easily. Why is it so?
Baba: The one who has a trace of lust will certainly have anger. It is impossible that if someone has a trace of lust, he won't have anger. Those who are lustful will certainly become angry. The one, whose desire of lust is not fulfilled, certainly becomes angry .

जिज्ञासू – लोभ और मोह?
बाबा – उसके साथ वो भी जुड़े हैं। मुखिया जब तक रहेगा तो उसके सहयोगी भी रहेंगे और मुखिया खलास हो जाएगा तो उसके सहयोगी भी खलास हो जाऐंगे। इसलिए शंकरजी को सिर्फ काम दहन करते हुए दिखा दिया। ये नहीं क्रोध दहन कर दिया, लोभ दहन कर दिया, मोह दहन कर दिया, अहंकार दहन कर दिया, नहीं।
जिज्ञासू – जो आदमी, क्रोध, लोभ, मोह दिखाता है उसके पास काम का.....।
बाबा – समझ लेना चाहिए कि काम का अंश ज़रूर है। कभी विश्वास नहीं करना चाहिए कि इसमें काम विकार नहीं होगा।
Student: What about greed and attachment?
Baba: They are also connected with them (i.e. lust and anger). Until the head is alive, his helpers will also be alive and when the head is gone, his helpers will perish too. That is why Shankarji has been shown to be destroying just (the vice) lust. It is not that he burnt anger, burnt greed, burnt attachment, burnt ego, no.
Student: The person, who shows anger, greed, attachment, will have lust....
Baba: You should understand that he certainly has a trace of lust. You should never believe that he will not have lust.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासू – मगर ये सब छोड़ने के लिए बहुत डिफिकल्ट (मुश्किल) हो रहा है। क्या करना है?
बाबा – कुछ नहीं करना है। सब तेरा कुछ नहीं मेरा। क्या? सब कुछ तेरा। ये शरीर, ये भी तेरा।
जिज्ञासू – मगर हर रोज के लिए काम–काज कैसा करना?
बाबा – जैसे चलाए। ये तन तेरा हेा गया तो तन से जो काम लेना चाहे सो ले।
जिज्ञासू – मगर...
बाबा – मगरमच्छ।
Student: But we are finding it difficult to leave all this. What should we do?
Baba: You don't have to do anything. (Think that) Everything is yours (Shivbaba's); nothing is mine. What? Everything is yours. This body is also yours.
Student: But how should we work everyday?
Baba: As he (Shivbaba) makes you work. If this body has become his, then he can extract whatever work he wishes to extract from the body.
Student: *Magar* (But)...
Baba: *Magarmachch* (crocodile)...

जिज्ञासू – मगर उस समय हमारा बुद्धि चलता रहता है।
बाबा – तुम्हारा बुद्धि चल रहा है। तो परमात्मा की बुद्धि तो नहीं चल रहा है। श्रीमत तो नहीं चल रहा है।
जिज्ञासू – श्रीमत चलता है।
बाबा – श्रीमत ै चलेगा तो जो डायरेक्शन दे सो मानना पड़े। पक्का निश्चय बुद्धि चाहिए कि भगवान हमको गड्ढे में तो नहीं गिराए देगा। पातालपुरी में तो नहीं ले जाएगा। भगवान है तो हमारा कल्याण करने वाला ही होगा। भगवान तो अकल्याण किसी का करता ही नहीं ; क्योंकि उसको स्वार्थ ही नहीं होता। जब उसको अपना रथ ही नहीं है तो वो किसके लिए हमारा अकल्याण करेगा।
Student: But at that time our intellect continues to work.
Baba: Your intellect is working. But the thoughts of the Supreme Soul are not going on in your intellect. It doesn't think about the *Shrimat*
Student: It thinks of *Shrimat*.
Baba: If it thinks about the *Shrimat*, then you will have to accept the directions that He gives. You should develop the firm faith in the intellect that God will not allow us to fall into the pit. He will not take us to the hell (*paataalpuri*). If He is God, then He will certainly be the one to bring benefit. God certainly doesn't harm anyone because He does not have any selfish motive at all. When He does not have His own chariot at all, then for who's sake will He harm us?

समय – 31.35
जिज्ञासू – बाबा, गीता पाठशाला 11.30 को स्टार्ट होता है और 1.30 या 2.00 तक क्लास चलता है और वो कुछ लोग दो–दो बस पकड़कर बहुत दूर से आते हैं (क्लास) अटेण्ड करने के लिए। उनको कुछ अगर हम दिए तो खाने के और पीने के लिए ये खराब होता है क्या?
बाबा – खराब नहीं होता है ; लेकिन ये हैं कि, परिवार है। हमारा ही परिवार है। परिवार में अगर किसी के ऊपर कोई स्थिति–परिस्थिति आ जाती है और उस स्थिति–परिस्थिति में हमको सहयोगी बनना है कि असहयोग आंदोलन कर देना है?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 31.35
Student: Baba, the *Gitapathshala* starts at 11.30 a.m. and the class continues upto 1.30 or 2.00 p.m. and some people come from far off places by changing two buses to attend (the class). If we give them something to eat and drink, is it a bad thing?
Baba: It is not bad, but the thing is, it is a family, it is indeed our family. If someone from our family has to face any circumstances, should we become his helper in those circumstances or should we start a non-cooperation movement?

जिज्ञासू – अगर स्थिति बहुत अच्छा रहे तो?
बाबा – जब गीता पाठशाला में स्थिति सामान्य चल रही है। अच्छा भी नहीं, सामान्य स्थिति चल रही है तो जो दूर से आते हैं उनसे पूछ लेने में क्या हर्जा है कि खाना खाके आए हो या नहीं? ऐसे तो आदमी सुबह 10.00 बजे जाता है ऑफिस या कोई धंधे में जाता है और शाम को पांच बजे घर में लौटता है। तो खाके जाता है और आकरके आठ घंटे के बाद फिर खाना खा लेता है। तो मोस्टली (ज्यादातर) तो यही समझा जाता है कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तो होना तो यही चाहिए कि हम अपना बोझ दूसरों के ऊपर क्यों डालें; लेकिन फिर भी खिचड़ी तो ब्राह्मण परिवार में आम बात कर दी। कोई ज्यादा खर्चा नहीं है जो गरीब आदमी है वो भी कोई को खिचड़ी खिलाए सके और बनाने में भी ज्यादा टाईम नहीं लगता।
Student: What if the situation is very good?
Baba: When the situation is normal in the *Gitapathshala*, not good, but just normal, then is there any harm in asking those who are coming from far off places, whether they have eaten food or not? Normally, when a person leaves his home at 10.00 A.M for his office or any business and returns home at five O'clock in the evening, he leaves after having eaten something and he takes his meals again after returning (home) after eight hours. So, mostly it is thought that it does not make any difference. It should be so that we should not become a burden for anyone, nevertheless *khichari* (rice and dal boiled together) has been considered to be a common item in the Brahmin family. There is not much expenditure involved in it. Even a poor person can offer *khichari* to anyone and it does not even take much time to cook it.

जिज्ञासू – फ्रुटस् देने में?
बाबा – फ्रुटस् जो हैं वो गरीब आदमी नहीं कर पाएगा। आजकल फ्रुटस् इतने ज्यादा कॉस्टली हो रहे हैं। खिचड़ी तो सहज है। सब कर सकते हैं। रोटी–वोटी बनाने में टाईम ज्यादा लगता है। रोटी बनाने में, इडली बनाने में, डोसा बनाने में।
जिज्ञासू – मगर डोसा खाना मना है क्या?
बाबा – तली हुई चीज़ है ना। जो तली हुई चीज़ है वो पेट को नुकसान करती है। तलते हैं ना उसको। तेल डाला फिर उसमें डोसा का डाला। तो तल जाता है ना। तो तलने से वो पेट को नुकसान दायक है। फ्राई (तलना)।
Student: What about giving fruits?
Baba: A poor person will not be able to afford fruits. Nowadays fruits are becoming so costly. *Khichari* is very easy. Everyone can afford it. It takes more time to prepare *roties*. (It takes more time to) prepare *roties,* to prepare *idli*, to prepare *dosa*.
Student: But is eating *dosa* prohibited?
Baba: It is a fried thing, isn't it? Fried things cause harm to the stomach. It is fried, isn't it? First you put oil, then the mixture of *dosa* to it. So, it is fried, isn't it? So, frying makes it harmful for the stomach. Fry.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासू – किसी को रोस्ट किया हुआ (तला हुआ) चीज़ खाना मना है?
बाबा – नहीं मना नहीं है। किसी का लीवर बहुत अच्छा है तो करें; लेकिन मोस्टली क्या है कि जो बाबा के बच्चे हैं उनमें मोस्टली तो लीवर सबका खराब चल रहा है। पेट किसी का अच्छा नहीं रहता। घड़ी–घड़ी कुछ न कुछ कमजोरी आ जाती है।
Student: Is it prohibited to consume roasted things?
Baba: No, it is not prohibited. If someone's liver is good he can eat. But mostly what happens is that the liver of most of Baba's children does not work properly. Nobody's stomach is working well. Again and again it becomes weak to some extent or the other.

समय – 35.12
जिज्ञासू – एडवान्स में आकर शरीर छोड़ दिया तो फिर वो एडवान्स में आता है क्या?
बाबा – जो एडवान्स में आता है उसकी बुद्धि में ये बात बैठ जाती है।
जिज्ञासू – बाप को माना है।
Time: 35.12
Student: If someone leaves the body after entering the path of advance (knowledge) then does he come again in advance (knowledge) (after taking rebirth)?
Baba: It fits into the intellect of the one who enters the advance (knowledge)...
Student: They have accepted the Father.

बाबा – बाप को माना तो लेकिन ये बात बैठ जाती है एडवान्स में आने के बाद कि बाप का जो बच्चा बना उसको वर्सा ज़रूर मिलेगा और इसी जन्म में मिलेगा। शरीर रहते–2 मिलेगा। शरीर छोड़के अगर वर्सा मिला तो वो तो अंधश्रद्धा हो गई। वो ज्ञान नहीं है। वो भक्ति है। कि हम इस जन्म में पढ़ाई पढ़ते रहे और अगले जन्म में हमको प्राप्ति हो जाएगी। ये अंधश्रद्धा है या श्रद्धा विश्वास है? अंधश्रद्धा है। तो उसकी बुद्धि में पक्का बैठ गया कि हमको शरीर रहते–रहते भगवान से प्राप्ति करनी है सुख शांति की। तो अगर शरीर छुटा भी कारणे–अकारणे तो वो आत्मा दुबारा जन्म लेगी और जन्म लेकर के फिर शरीर से पुरूषार्थ करेगी और भगवान से वर्सा लेकर छोड़ेगी। बेसिक नॉलेज वालों की तो बुद्धि में ही नहीं है कि हमको इसी जन्म में प्राप्ति करनी है। ब्रह्मा बाबा शरीर छोड़ गए, हमारा बाप ही शरीर छोड़ गया तो हम भी छोड़ देंगे। हम भी बाप समान बनेंगे।
Baba: They did accept the Father, but after entering the advance (knowledge) it fits into their intellect that the one who has become the Father's child will definitely receive the inheritance and he will receive it in this very birth. He will receive it while being in the body. If the inheritance is received after leaving the body, then it is a blindfaith. It is not knowledge. It is *bhakti* (devotion) that, we should continue to study in this birth achieve the attainments in the next birth. Is it blindfaith or is it devotion and faith? It is blind faith. So, it has fitted into his (the one who was in the advance knowledge) intellect that he has to achieve happiness and peace from God while living in this body. So, even if he leaves the body due to some or the other reasons, then that soul will take rebirth and after taking birth it will make special effort for the soul *(purusharth)* through the body again and it will definitely take the inheritance from God. It is not at all in the intellect of those who follow the basic knowledge that they have to achieve attainments in this very birth . Brahma Baba left his body; when our father himself has left the body, then we will leave our body as well. We will become like the Father too.

समय – 36.33
जिज्ञासू – ब्रह्मा बाबा अब सूक्ष्म शरीरधारी हो गया है। ऐसा और कोई भी सूक्ष्म शरीरधारी होता है क्या? शरीर छोड़ने के बाद।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा – हाँ। कुमारिका दादी हैं, मनमोहिनी दीदी हैं।
जिज्ञासू – वो कितने होते हैं?
बाबा – सारे ही विधर्मी जितने हैं वो सब शरीर छोड़ने वाले ही तो बनेंगे। सूक्ष्म शरीरधारी बनेंगे। सूक्ष्म शरीर धारण करते रहेंगे और सूक्ष्मवतन में निवास करते रहेंगे। जब तक 500 करोड़ का विनाश न हो तब तक सूक्ष्मवतन में ही पड़े रहेंगे।
Time: 36.33
Student: Now Brahma Baba has assumed a subtle-body. Are there some others too who assume a subtle-body in the same way, after leaving the body?
Baba: Yes. There is *Kumarika Dadi*, there is *Manmohini Didi*.
Student: How many of them are there?
Baba: All the *vidharmis* (those who have inculcations opposite to that said by the Father) will leave their body. They will assume a subtle body. They will keep on assuming a subtle body and continue to reside in the subtle world. They will lie in the subtle world until the 500 crores (5 biliion) (souls) are destroyed.

जिज्ञासू – ब्रह्मा बाबा तो सूक्ष्म शरीरधारी बनकर दूसरे शरीर में प्रवेश करके वो सुन रहा है। शंकर के .....
बाबा – ऐसी ही दूसरी आत्माऐं भी।
जिज्ञासू – ऐसे ही दूसरी आत्माओं का भी होता है क्या?
बाबा – उनके जो बीज होंगे। दूसरे–दूसरे धर्म के बीज, उनमें प्रवेश करेंगे और उनमें प्रवेश करके सुनेंगे। ऐसे थोड़े ही कि जो नम्बरवार नीचे धर्म के जो आधारमूर्त हैं वो सूर्यवंशियों में प्रवेश कर जायेंगे। इतनी उनमें ताकत ही नहीं थी। तो जो जिस धर्म का आधारमूर्त होगा वो उसी धर्म की बीजरूप आत्माओं में प्रवेश करके ज्ञान को सुनेगा।
Student: After assuming a subtle body, Brahma Baba is entering in another body and listening (the knowledge), (in) Shankar's (body)...
Baba: It is the same with the other souls too.
Student: Does it happen like this with the other souls too?
Baba: They will enter (the body of) their seeds (seed form souls), the seeds of the other religions; and they will listen (the knowledge) after entering them. It is not that the root souls of the number wise lower religions will enter the *Suryavanshis* (those belonging to the Sun dynasty). They do not have that much power at all. So, the root soul of a particular religion will enter the seed-form soul of the same religion and listen to the knowledge.

समय – 40.44
जिज्ञासू – बाबा, शिवबाबा है निराकारी स्टेज वाला।
बाबा – हाँ, निराकारी स्टेज वाला।
जिज्ञासू – और लक्ष्मी–नारायण साकार में रहते हैं और शंकर आकारी स्टेज वाला है ना।
बाबा – आकारी स्टेज वाला है।
Time: 40.44
Student: Baba, Shivbaba possesses an incorporeal stage.
Baba: Yes, an incorporeal stage.
Student: And Lakshmi-Narayan are in the corporeal stage and Shankar is in the *aakari* stage (the stage of thinking and churning), isn't he?
Baba: He is the one who possesses an *aakari* stage.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासू – वो सभी एक ही है?
बाबा – हैं तो तन से एक ही; लेकिन आत्माऐं अलग–अलग काम करती हैं। जब नारायण बन जाएगा तो नारायण में न शिव होगा और न कृष्ण होगा। होगा? नहीं होगा। तो वो नारायण होगा। तब रामराज्य कहा जावेगा, नारायण राज्य कहा जावेगा। तो शंकर अलग और प्रजापिता अलग। प्रजापिता माना सिर्फ राम वाली आत्मा। राम बाप को कहा जाता है। जब शंकर कहा जाए तो उस शरीर के द्वारा सिर्फ राम वाली आत्मा पार्ट नहीं बजाती है। कृष्ण वाली आत्मा भी पार्ट बजाती है। कृष्ण उर्फ ब्रह्मा दादा लेखराज वाली आत्मा भी पार्ट बजाती है और शिव की आत्मा भी पार्ट बजाती है। कौन, कब पार्ट बजाता है सो कोई जल्दी पहचान नहीं पाता है; इसलिए शंकर को प्रजापिता नहीं कहेंगे।
जिज्ञासू – प्रजापिता तो आदि की बात है।
बाबा – नहीं–नहीं अभी की भी बात है। प्रजापिता जो है वो पतित का पार्ट है। पतित तन का पार्ट है प्रजापिता।
Student: Are all of them the same?
Baba: They are indeed one through the body, but the souls perform different tasks. When he becomes Narayan, there will be neither Shiv nor Krishna, in Narayan. Will they be there? No. So, he will be Narayan. Then it will be called the kingdom of Ram, kingdom of Narayan. So, Shankar is different and Prajapita is different. Prajapita means just the soul of Ram. Ram is called the father. When it is said Shankar, then it is not just the soul of Ram who plays a part through that body. The soul of Krishna also plays a part. The soul of Krishna, alias, Brahma Dada Lekhraj plays a part as well as the soul of Shiv plays a part. But no one can quickly recognize, who plays the part and when he plays it. That is why Shankar won't be called Prajapita.
Student: 'Prajapita' is the part of the beginning.
Baba: No, no. It is a part of the present time as well. Prajapita is the part of the sinful one. Prajapita's part is the part through the sinful body.

समय – 42.39
जिज्ञासू – बाबा, शिव शंकर के तन में आकर जब पार्ट बजाता है। उस समय में ये प्रजापिता का आत्मा कैसा अनुभव करता है?
बाबा – उस आत्मा को तो बाबा को याद करना है।
जिज्ञासू – सिर्फ याद करता है।
बाबा – याद करना है ना।
Time: 42.39
Student: Baba, when Shiv comes and plays a part through the body of Shankar, at that time how does the soul of Prajapita feel?
Baba: That soul has to remember Baba.
Student: He just remembers.
Baba: He has to remember, hasn't he?

जिज्ञासू – मेरा प्रश्न ऐसा नहीं है। जब शिव आकर शंकर के तन में पार्ट करता रहता है। उस समय में शंकर का आत्मा कैसा अनुभव करता रहता है?
बाबा – शंकर जिसे हम कहते हैं। पहले ये समझ ले शंकर कौन? शंकर माना तीन आत्माओं की मिक्वैरिटी। एक ही शरीर में। एक ही शरीर में तीन आत्माऐं जो पार्ट बजाती हैं उसको शंकर कहते हैं। तो अब पता नहीं चलता, तुरंत पता नहीं चलता।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: This is not my question. When Shiv comes and plays the part through the body of Shankar how does the soul of Shankar feel at that time?
Baba: The one whom we call Shankar; first let us understand, who is Shankar? Shankar means a mixturity of three souls in the same body. The part that the three souls play through the same body is called Shankar. So, it cannot be known now; you cannot know immediately.

जिज्ञासू – मगर प्रजापिता को पता होता है ना, अब शिव आया है।
बाबा – नहीं। जैसे ब्रह्मा बाबा में शिव बाबा आते थे। शिव आते थे ना। तो क्या तुमको पता चलता है कब ब्रह्मा बोलते हैं? कब शिवबाबा बोलते हैं? पता ही नहीं चलता। शिव कब आता है, कब चला जाता है तुमको पता पड़ता है क्या? नहीं पता। फिर ब्रह्मा को पता चलता है क्या? ब्रह्मा को भी पता नहीं चलता। ऐसे ही राम वाली आत्मा को भी पता नहीं चलता। बाद में सोचते हैं ये प्वाइन्ट तो हमारी बुद्धि में था ही नहीं। कभी मन, चित्त और स्वप्न, संकल्प में भी नहीं आया और अभी ये नई बात निकल पड़ी। तो नई बात कौन सुनाता है? एक शिव ही आकरके सुनाता है। वो ही जन्म–जन्मांतर की नई–नई बातें जानता है। और आत्माऐं नहीं जानती। अर्जुन तू अपने जन्मों को नहीं जानता, मैं बताता हूँ।
Student: But Prajapita comes to know that Shiv has come now, doesn't he?
Baba: No. For example, Shivbaba used to come in Brahma Baba. Shiv used to come in him, didn't He? So, do you come to know, when Brahma speaks and when Shivbaba speaks? You don't come to know at all. Do you know when Shiv comes and goes away? You don't know. So, does Brahma come to know? Brahma too doesn't come to know. Similarly, the soul of Ram doesn't come to know as well. Later on he thinks that this point was not in my intellect at all. It never occurred in my mind and dream, even in my thoughts and now this new point has emerged. So, who narrates the new points? Only one Shiv comes and narrates (new things). He alone, knows the new facts of many births; the other souls don't know it. (It is said in the Gita) Arjun! You do not know about your births. I tell you.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info